www.samikshainstitute.com

THE MARKS OF TRUST

SAMIKSHA SIGN OF SUCCESS

# समीक्षा इंस्टीट्यूट

*A Center of Excellence for Knowledge, Skills & Aptitude*

## QTS - MPPSC MAINS 2019

Test ID : 001 Date : 10-08-2020

TOTAL MARKS-150

SUBJECT ANCIENT AND MEDIVAL HISTORY

TIME 01:30 Hrs.

## SAMPLE ANSWER COPY

### परीक्षार्थियों के लिए निर्देश (DIRECTION FOR CANDIDATES)

- **Be accountable to yourself.**
- आप की ईमानदारी आपके हाथ में है।
- Please mention Your Name, Date, and Test ID.
- कृपया अपना नाम, दिनांक, और टेस्ट आई–डी का उल्लेख करें।
- Convert Images Into PDF File then Upload the File.
- इमेज को पीडीएफ फाइल में बदलें फिर फाइल अपलोड करें।
- All three questions are compulsory, Try to write in the given word limit and given time.
- तीनों प्रश्न अनिवार्य हैं, दिए गए शब्द सीमा और दिए गए समय में लिखने का प्रयास करें।

**Student Name**

**Candidate's Mobile No.**

**Student Name**

**Invigilator Signature**

## JOIN US

98262-28312, 90745-85746, 77708-38222

Follow us on : | Subscribe YouTube Channel

98262-28312, 90745-85746, 77708-38222 | Follow us on : | Subscribe YouTube Channel

# QUESTION PAPER

## निर्देश /Direction -

प्रश्न क्रमांक 1- इस प्रश्न में A से O तक कुल 15 अति लघु उत्तर स्वरूप के प्रश्न है जिनका उत्तर एक या दो पंक्तियों में देना है। आन्तरिक विकल्प नहीं है। प्रत्येक प्रश्न 03 अंकों का है।

**Q. No.1. These questions consists of 15 very short answer type questions from A to O each question is to be answered in one or two lines. There is no internal choice each question carries 03 marks** 3*15= 45

(A) खिज्र खाँ / Khizra Khan

(B) अमरकोश / Amarkosh

(C) 16 महाजनपद / 16 Mahajanpad

(D) मार्कोपोलो / Marco Polo

(E) शैव धर्म / Shaivism

(F) बंगाल का सेन वंश /Sen Dynasty of Bengal

(G) मनसबदारी व्यवस्था / Mansabdari System

(H) रामानंद / Ramanand

(I) शाहआलम द्वितीय / Shah Alam II

(J) पतंजलि / Patanjali

(K) बालाजी बाजीराव /Balaji Bajirao

(L) पल्लव वंश / Pallava Dynasty

(M) गांधार कला / Gandhar Art

(N) दिगंबर समुदाय /Digambar Community

(O) यर्जुवेद / Yajurveda

**निर्देश /Direction -**

**प्रश्न.क्रमांक.2 निम्नलिखित में से किन्हीं 10 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए**

**Q.No.2 Write the Answer of any ten of the following questions in about 100 words** **6*10 = 60**

1. वैदिक आर्य और सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के मध्य संस्कृति के बीच के अंतर की व्याख्या कीजिए। / **Explain about the cultural differences between the people of Vedic people & Indus Valley Civilization.**
2. बौद्ध धर्म के पतन के क्या कारण थे? / **What were the Causes of the downfall of Buddhism in India?**

3. मुहम्मद बिन कासिम के अभियान पर प्रकाश डालें। / **Throw light on the campaign of Mohm. Bin Qasim.**

4. मौर्यसाम्राज्य के प्रशासनिक व्यवस्था की व्याख्या कीजिए। / **Explain in detail about the Maurya's administration system.**

5. भक्ति आंदोलन के मूल तत्व क्या थे? / **What were the fundamental elements of 'Bhakti Aandolan'.**

6. पानीपत के तृतीय युद्ध का विश्लेषण कीजिए। / **Analyse the 'third battle of panipat' in detail.**

7. गुप्त साम्राज्य के विस्तार का विश्लेषण कीजिए। / **Analyse the expansion of Gupta Dynasty during Gupta era.**

8. पूर्व–मौर्यकाल में भारत पर विदेशी आक्रमण के प्रभाव का संक्षेप में वर्णन कीजिए । / **Explain in brief the impacts of foreign invasions on India in Pre - Mourya Period.**

9. भारत में इंडो ग्रीक शासन काल के प्रमुख पहलू क्या थे ? / **What were the important aspects of Indo- Greek Ruling period in India?**

10. प्राचीन भारत में भूराजस्व प्रणाली के सिद्धान्त और व्यवहार का मूल्यांकन कीजिए। / **Critically evaluate the theory and practice of land revenue system in Ancient India**

**11.** जहाँगीर के शासन के दौरान मुगल चित्रकारी के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए। **/Explain about the development of Mughal painting during the reign of Jahangir.**

**12.** मध्यकालीन समय के ऐतिहासिक रचना और उनके रचनाकारों के बारे में जानकारी प्रदान कीजिए। **/Explain in detail about the writters and their compositions during medieval period?**

**प्रश्न.क्रमांक.3- निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 300 शब्दों में लिखिए।**

**Q.no-3 Answer any three of the following questions in about 300 words each** **15 *3 = 45**

1. बौद्ध और जैन धर्म के उदय होने के मुख्य कारण क्या थे और उनका भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

   Discuss the reasons for rise of Jainism & Buddhism in India and their Impact on Indian Society.

2. कुषाण वंश का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव रहा, विस्तार में व्याख्या कीजिए।

   Discuss in detail about the effect of Kushan Dyansty on the History of India.

3. अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण प्रणाली पर प्रकाश डालें।

Throw some light on Market Control system initiated by Allauddin Khilji

4. मुगलकाल के दौरान कला और संस्कृति के विकासका विश्लेषण कीजिए।

Analyse the growth of Art & Culture during Mughal Period.

5. अकबर के विजय अभियानों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

Explain Akbar's Military Victory Campaigns in Detail.

THE MARKS OF TRUST

समीक्षा इंस्टीट्यूट

# SAMPLE ANSWERS

**निर्देश /Direction -**

**प्रश्न क्रमांक 1- इस प्रश्न में A से O तक कुल 15 अति लघु उत्तर स्वरूप के प्रश्न है जिनका उत्तर एक या दो पंक्तियों में देना है। आन्तरिक विकल्प नहीं है। प्रत्येक प्रश्न 03 अंकों का है।**

**Q. No.1. These questions consists of 15 very short answer type questions from A to O each question is to be answered in one or two lines. There is no internal choice each question carries 03 marks** **3*15= 45**

(A) **खिज खाँ (1414-1421 ई.):-**

- सैयद वंश का संस्थापक
- उसने स्वयं को तैमूर के पौत्र शाहरूख का सिपहसालार बताया।
- इसने रैयत-ए- आला की उपाधि ली

(B) **अमरकोशः-**

- गुप्तकालीन प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ
- रचनाकार- अमरसिंह
- संस्कृत भाषा में रचित।

(C) **16 महाजनपदः-**

- बौद्ध ग्रंथ अगुंत्तर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र में वर्णित
- प्रमुख अंग, मगध , चेदि, वत्स आदि।
- मध्यप्रदेश में अवंति और चेदि

**(D) मार्को पोलोः-**

- इटली का राजदूत और व्यापारी
- 13वीं सदी के अंत में पाण्ड राज्य की यात्रा की
- सिल्क मार्ग होता हुआ चीन गया

**(E) शैव धर्मः-**

- भगवान शिव से संबंधित
- प्रथम उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में
- प्रमुख समप्रदाय - कापालिक, कालामुख, लिंगायात

**(F) बंगाल का सेन वंशः-**

- संस्थापक -सामंत सेन
- राजधानी- नादिया
- अन्य शासक- विजय सेन, बल्लाल सेन तथा लक्ष्मण सेन

**(G) मनसबदारी व्यवस्थाः-**

- अकबर द्वारा 1567 में प्रारम्भ
- मंगोलो की दशमल पद्वति पर आधारित
- जात और सवार की भूमिका

**(H)रामानंदः-**

- भक्ति आंदोलन के प्रमुख निर्गुण संत
- राम को अपना आराध्य माना
- भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लाये

**(I)शाहआलमः-**

- मुगल शासक
- इसके शासन काल में अंग्रेजो ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया
- बक्सर का युद्ध (1764) और इलाहाबाद की संधि(1765) से संबंधित

**(J)पतंजलिः-**

- पुष्यमित्र शुंग के अश्वमेध यज्ञकर्ता
- योगदर्शन के प्रतिपादक
- पाणिनी के अष्टाध्यायी पर महाभाष्य नामक टीका लिखा

**(K)बालाजी बाजीराव (1740-1761):-**

- नानासाहब के नाम से प्रसिद्ध
- पानीपत का तृतीय युद्ध(1761) की हार का सदमा से मौत
- निजाम के साथ उदगीरी का युद्ध और झलकी की संधि

**(L) पल्लव वंशः-**

- संस्थापक- सिंहविष्णु
- राजधानी- कांची
- महाबलीपुरम के प्रसिद्ध रथ मंदिरों का निर्माण

**(M)गांधार कलाः-**

- अन्य नाम- इण्डोग्रीक शैली
- बुद्ध और बौद्धिसत्व की मूर्तियों का निर्माण
- पश्चिमोत्तर भारत में कनिष्क के समय विकसित

**(N)दिगंबर समुदायः-**

- संस्थापक- भद्रवाहु
- वस्त्र धारण नहीं करते
- संलेखना विधि से देहत्याग

**(O)यजुर्वेदः-**

- गद्य-पद्य दोनों में रचित
- यज्ञ के नियमों व विधानों का वर्णन
- प्रमुख पुरोहित अधयर्वु

## निर्देश /Direction -

**प्रश्न.क्रमांक.2 निम्नलिखित में से किन्हीं 10 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए**

**Q.No.2 Write the Answer of any ten of the following questions in about 100 words** **6*10 = 60**

1. **वैदिक आर्य और सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के मध्य संस्कृति के बीच के अंतर की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- वैदिक आर्य और सिंधु घाटी सभ्यता के लोगो की संस्कृति के मध्य निम्नलिखित अंतर है-

| आधार | वैदिक आर्य | सिंधु घाटी सभ्यता |
|---|---|---|
| प्रकृति | ग्रामीण संस्कृति | नगरीय सभ्यता |
| समाज | पितृसत्तात्मक | मातृसत्तात्मक |

| | | |
|---|---|---|
| लिपि | लिपि का ज्ञान नहीं | चित्रात्मक लिपि |
| धातु प्रयोग | कांसा,तांवा और लोहे का प्रयोग | लोहे का ज्ञान नहीं |
| व्यापार | सीमित व्यापार | आंतरिक और विदेशी व्यापार |
| पूज्यनीय पशु | गाय | कूबड वाला बैल |

**2. बौद्ध धर्म के पतन के क्या कारण थे?**

उत्तर- बौद्ध धर्म की स्थापना महात्मा बुद्ध ने जिन उद्देश्यों को लेकर की थी उनसे विमुख होने से बौद्ध धर्म का पतन हुआ इसके निम्न कारण है-

1. बौद्ध धर्म ने प्रारम्भ में जिन कर्मकाण्डों और बुराईयों का विरोध किया वे बाद में बौद्ध धर्म में शामिल हो गये।
2. बौद्ध धर्म का हीनयान महायान, वज्रयान आदि अनेक संप्रदायों में विभाजित होना।
3. बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश से भिक्षुओं का नैतिक पतन हुआ।
4. बौद्ध धर्म की चुनौतियों का सामना करने के लिये ब्राह्मण धर्म ने स्वयं में सुधार किया ।
5. बाहरी आंक्राताओं ने बौद्ध मठों का नाश और भिक्षुओं की हत्या की ।
6. बाद में बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में जन सामान्य की पालि भाषा को छोड़कर संस्कृत में उपदेश देना।

7. कालान्तर में महायान द्वारा मूर्ति पूजा और वज्रयान तांत्रिक क्रियाओं को अपनाना।
8. पुष्यमित्र शुंग और शशांक जैसे शासकों द्वारा बौद्ध धर्म को क्षति।

**निष्कर्षः-** इन सभी कारणों से बौद्ध धर्म का भारत में तो पतन हो गया लेकिन एशिया के अधिकांश देशों में आज भी फैला हुआ है।

**3.मुहम्मद बिन कासिम के अभियान पर प्रकाश डालें।**

उत्तर- मुहम्मद बिन कासिम भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी था इसके आक्रमण की जानकारी चचनामा पुस्तक में मिलती है।

**उद्देश्यः-**

1. धन प्राप्ति करना
2. इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना

**अभियान का विवरणः-**

- कासिम ने सबसे पहले सिंध प्रांत के मुख्य बंदरगाह देवल पर अधिकार कर लिया ।
- 712 में राबर के युद्ध में सिंध के राजा दाहिर को पराजित किया ।
- उसने सिंध के लोगों का कत्लेआम किया और काफी लूटपाट की।
- कासिम को कश्मीर के ललितादित्य और दक्षिण के राष्ट्रकूटों ने आगे बढने से रोका।

**प्रभावः-**

1. भारत में इस्लाम का आगमन हुआ।
2. पहली बार जजिया कर लगाया गया।
3. कासिम ने तक्षशिला विश्वविद्यालय को न-ट कर दिया ।

**4.मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।**

उत्तरः- मौर्य शासकों ने भारत में पहली बार एक विस्तृत लोक कल्याणकारी प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। इसकी जानकारी मैगस्थनीज की पुस्तक इण्डिका, कौटिल्य के अर्थशास्त्र और अशोक के अभिलेखों से मिलती है।

**स्वरूपः-**

1. केन्द्रिकृत
2. दैवीकरण
3. वंशानुगत
4. चक्रवर्ती राज्य

**विशेषताएँ-**

- केन्द्र प्रशासन में राजा सर्वोच्च होता था। इसकी सहायता के लिये मंत्री परिषद होती थी।
- विशाल प्रशासनिक अधिकारी वर्ग था जिनमें शीर्ष अधिकारी तीर्थ और विभागअध्यक्ष होते थे।
- साम्रज्य का प्रांतों में विभाजन किया गया। प्रांत प्रमुख- कुमार/ आर्य पुत्र।
- प्रशासन का मण्डल, जिला व ग्रामीण प्रशासन में विभाजन।
- नगरीय प्रशासन 30 सदस्यीय समूह की 6 समीतियों द्वारा किया जाता था।

- न्याय प्रशासन में कण्टक शोधन और व्यवहारिक न्यायलय होते थे।
- प्रशासन की सहायता के लिये व्यापक गुप्तचर व्यवस्था।

**5. भक्ति आंदोलन के मूल तत्व क्या थे।**

उत्तरः- भक्ति आंदोलन मध्यकालीन हिन्दु धर्म और समाज का सुधार आंदोलन था। यह दक्षिण भारत में प्रारम्भ होकर उत्तर भारत में विस्तारित हुआ।

**मूल तत्वः-**

- बाह्य आण्डबरों और अंधविश्वासों की अपेक्षा सच्ची भक्ति पर बल।
- सगुण और निर्गुण ब्रह्म की उपासना ।
- जन सामान्य की भाषा में उपदेश।
- छुआछूत और ऊँच-नीच की भावना का प्रबल विरोध।
- सामाजिक सदभाव और धार्मिक समन्वय (हिन्दू मुस्लिम एकता) पर जोर।
- गुरू की महत्ता पर बल ।

**प्रमुख संतः-** शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, नानाक, तुलसीदास आदि।

**6. पानीपत के तृतीय युद्ध का विश्लेषण कीजिए।**

उत्तरः- पानीपत के तृतीय युद्ध 14 जनवरी 1761 को मराठों और अहमदशाह अब्दाली के मध्य हुआ जिसमें मराठों की बहुत बुरी पराजय हुई।

**कारणः-**

- अहमदशाह की साम्रज्यवादी नीति
- मराठों की महत्वाकांक्षा
- उत्तर भारत की राजनैतिक शून्यता

**महत्वपूर्ण तथ्यः-**

- इस युद्ध में मराठा सेना का नेतृत्व सदाशिव भाऊ और विश्वासराव ने किया।
- मराठों द्वारा प्रयोग में लायी जा रही तोपों की अपेक्षा अफगानी तोपें काफी अच्छी थी।
- युद्ध के समय मराठा सरदारों और सेनापतियों में एकता की कमी ।

**परिणामः-**

1.मराठा संघ का विभाजन।

2. अंग्रेजों की भारत विजय का मार्ग प्रशस्त।

3 मुगलों का पतन ।

**निष्कर्ष :-** इस युद्ध यह निश्यित कर दिया कि मराठे भारत के अव स्वामी नही होंगे।

**7.गुप्त साम्राज्य के विस्तार का विश्लेषण कीजिए।**

उत्तरः- गुप्त शासकों ने अपने पराक्रम, कूटनीति और वैवाहिक नीति के द्वारा एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। इसका सर्वाधिक विस्तार भारतीय नेपोलियन समुद्रगुप्त ने किया था।

- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि वंश की राजकुमारी से विवाह किया और नेपाल तक राज्य स्थापित किया।
- समुद्रगुप्त ने आर्यवर्त के 9 राजाओं का उन्मूलन कर उनके राज्यों का गुप्त साम्रज्य में विलय किया।
- समुद्रगुप्त ने दक्षिणावर्त के 12 राजाओं को परास्त कर देने हेतु वाध्य किया। उसने 8 आटविक राज्यों को अनुचर बनाया।
- शक मुरूण्ड विदेशी राज्यों पर विजय प्राप्त की, समतट, डवाक, कर्तपुर और नेपाल तक साम्राज्य विस्तार किया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने बंगाल और बल्ख राज्यों पर विजय प्राप्त की ।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने गुप्त साम्राज्य को चर्मोत्कर्ष पर पहुचा दिया लेकिन बाद में दुर्बल उत्तराधिकारियों के समय पतन प्रारम्भ हो गया था।

**निष्कर्षः-** गुप्त शासकों ने कश्मीर से कन्याकुमारी तथा सिंध से कामरूप तक विशाल साम्राज्य स्थापित कर दिया था।

**8. पूर्व-मौर्यकाल में भारत पर विदेशी आक्रमण के प्रभाव का संक्षेप में वर्णन कीजिए।**

उत्तर :- पूर्व मौर्यकाल में भारत में ईरानी और यूनानियों द्वारा आक्रमण किये गये।

**ईरानी आक्रमण के प्रभावः-**

- पश्चिमोत्तर भारत में खरोष्ठी लिपि का विकास, जो बाद में अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त ।

- अशोक के स्तभ लेखों में घण्टे की आकृति का प्रयोग ।
- भारतीय अपार सम्पत्ति की जानकारी यूनानियों को ईरानियों से मिली ।

**यूनानी आक्रमण का प्रभावः-**

- 326 ई. पूर्व से क्रमागत इतिहास लेखन की तिथि प्राप्त।
- भारत और यूरोप के बीच जल मार्ग और स्थल मार्गो की खोज।
- यूनानियों से ज्योतिष, नक्षत्र और चिकित्सा पद्धति की जानकारी ।
- यूनानियों से व्यापारिक संपर्क ।

**निष्कर्षः-** इस प्रकार ईरानी और यूनानियों के आक्रमण से भारत में राजनीति, कला, विज्ञान, और आर्थिक क्षेत्रों में अनेक प्रभाव पड़े।

**9. भारत में इंडो ग्रीक शासन काल के प्रमुख पहलू क्या थे?**

उत्तरः- मौर्योत्तर काल में भारत में आक्रमण करने वाले पहले विदेशी आक्रमणकारी इंण्डोग्रीक (हिन्द यूनानी) थे, इनका भारत में साम्राज्य विस्तार क्षेत्र पश्चिर्मोत्तर भारत तक सीमित था।

- इण्डो ग्रीक में सबसे महान शासक मिनाण्डर था। इसने अपनी राजधानी साकल को शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बनाया।
- मिनाण्डर ने नागसेन से बौद्ध धर्म की शिक्षा ली ।
- यूनानी शासकों ने पहली बार सोने के सिक्के जारी किये।
- उन्होंने भारत में यूनान की हेनलेनिस्टक कला चलाई।
- भारत में गांधार कला का विकास यूनानी संपर्क से ही हुआ।

**निष्कर्षः-** इंण्डोग्रीक की भारत में सफलता और संपन्नता को देखकर की बाद में शक, पह्लव और कुषाण भी भारत आये।

**10. प्राचीन भारत में भूराजस्व प्रणाली के सिद्धांत और व्यवहार का मूल्यांकन कीजिए।**

**उत्तरः-** प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भूराजस्व प्रणाली से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इस संबंध में निर्देश है कि राजा को कर निश्चित करते समय निम्न प्रमुख सिद्धांतों का ध्यान रखना चाहिए-

- कर सीमित तथा न्यायोचित होना चाहिए ।
- राजा को लोभ में आकर एक साथ बहुत अधिक कर नही लगाना चाहिए।
- कर थोड़ा-थोड़ा करके बढाना चाहिए।
- राज्य पर संकट के समय ही अतिरिक्त कर लगाना चाहिए।
- राजा को देश, जाति और आचर के अनुसार कर निर्धारण करना चाहिए।
- कर लगाते समय राजा में लाभ की वृत्ति नहीं होनी चाहिए।

**11. जहाँगीर के शासन के दौरान मुगल चित्रकारी के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।**

**उत्तरः-** जहाँगीर के शासन काल को मुगल चित्रकला का स्वर्ण काल कहा जाता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्न है-

- जहाँगीर स्वयं एक महान चित्रकार था। वह किसी भी चित्र को देखकर बता सकता था कि इसका चित्रकार कौन है,

- जहांगीर ने आगरा में आकारिजा के नेतृत्व में एक चित्रणशाला का निर्माण करवाया ।
- व्यक्तिवादी चित्रकला पर बल दिया।
- मनुष्य और पशुओं की चित्रकारी अधिक की गई।
- किनारेदारी चित्रों का विकास।
- प्रमुख चित्रकार- उस्ताद मंसूद, अबुल हसन, विशन दास, मनोहर, बसावन,

**निष्कर्षः-** जहांगीर के शासन काल में चित्रों में नवीन विशेषताओं का समावेश होने से मुगल चित्रकला चर्मोत्कर्ष पर पहुँच गई थी।

**12. मध्यकालीन समय की ऐतिहासिक रचनाऐं और उनके रचनाकारों के बारे में जानकारी प्रदान कीजिए।**

उत्तरः- मध्यकाल की प्रमुख रचनाऐं-

**1.चचनामाः-** काजी इस्माइल द्वारा अरबी भाषा में लिखित, सिंध आक्रमण की जानकारी।

**2. किताब उल हिन्दः-** अलबरूनी द्वारा अरबी भाषा में रचित महमूद गजनवी के काल की जानकारी।

**4.खजाइनुल फतूह-** अलाउद्दीन खिलजी के समय अमीर खुसरो द्वारा रचित ।

**5.तारीख-ए-फिरोजशाही एवं फतवा-ए-जहांदारीः-** फिरोजशाह तुगलक के समय जियाउद्दीन बरनी द्वारा लिखित

## प्रश्न.क्रमांक.3- निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 300 शब्दों में लिखिए।

## Q.no-3 Answer any three of the following questions in about 300 words each 15 *3 = 45

**1.बौद्ध और जैन धर्म के उदय होने के मुख्य कारण क्या थे और उनका भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?**

**उत्तरः-** छठी शताब्दी के पूर्व में भारत में कई धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ था, इनमें जैन धर्म और बौद्ध धर्म प्रमुख थे। इनके उदय के कारण निम्न थे-

- इस समय समस्त विश्व में नवीन धर्मों के उदय का वातावरण था। जैसे- चीन में कन्फ्यूशियस।
- ब्राह्मणवादी कर्मकाण्डों के कारण विभिन्न वर्गो में असंतोष था।
- क्षत्रिय लोग ब्राह्मणों के प्रभुत्व पर प्रबल आपत्ति करते थे और क्षत्रियों का ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के विरूध खड़ा होना, इन धर्मो के उदभव का कारण हुआ। इन दोनों धर्मो के संस्थापक क्षत्रिय थे।
- दोनों धर्मो में सहज एवं सरल पूजा पद्धति से शूद्रों और दासों को मोक्ष प्राप्ति का अवसर था।

- दोनों धर्मो में दया, करूणा, अहिंसा जैसे- प्रगतिशील आदर्शों का समावेश।
- व्यापार और वाणिज्य बढ़ने से वैश्यों का समाज में महत्व बढ़ गया था। लेकिन ब्राह्मणवादी समाज में वैश्यों को सम्मानजनक स्थिति ना मिलने से वे नये धर्म की तलाश में थे।
- शूद्रों के समान महिलाओं की भी इस समय स्थिति अच्छी नहीं थी। अतः वे ऐसे धर्म की आवश्यकता महसूस कर रही थी, जहां उन्हें सम्मानजनक स्थान मिल सके।

**भारतीय समाज पर प्रभावः-**

- वैदिक कर्मकाण्डों व वर्णव्यवस्था का काफी विरोध हुआ, जैन धर्म ने अहिंसा परमोधर्मः तथा बौद्ध ने आत्मदीपों भवः की शिक्षा दी ।
- इन्होने समाज में भौतिकतावादी जीवन पद्धति का त्याग कर सादा व सरल जीवन जीने पर जोर दिया।
- अहिंसा पर बल देने के कारण समाज में पशु बलि पर काफी हद तक रोक लग गई।
- समाज में महिलाओं और शूद्रों को धार्मिक कार्यो में भाग लेने का अवसर मिलने लगा।
- इन धर्मो के कारण विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ।
- इन दोनों धर्मो ने साहित्य, कला और दर्शन के क्षेत्र में योगदान दिया। जैसे- त्रिपिटक, आगम, सांची स्तूप, स्यादवाद।

**निष्कर्षः-** इस प्रकार जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उदभव एक धार्मिक और सामाजिक सुधार के रूप में हुआ जिसने भारतीय समाज को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया। दोनों धर्मो ने समानता एवं समन्वयवादी समाज की स्थापना पर बल दिया।

**2. कुषाण वंश का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव रहा? विस्तार से व्याख्या कीजिए।**

उत्तरः- कुषाण एक खानबदोश समुदाय था। जो यूची और तोखरी के नाम से भी जाना जाता था। इस वंश के महान शासकों ने भारत में एक विशाल साम्राज्य दीर्घकाल तक स्थापित किया था। जिसने भारतीय इतिहास पर निम्नाकिंत प्रभाव डाले-

- कनिष्क ने 78 ई. में गद्दी पर बैठने के बाद शक संवत् प्रारम्भ किया जो प्राचीन काल में उपयोग होने के साथ-साथ वर्तमान में भी भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय कलेन्डर के रूप में अपनाया है।
- कुषाण शासकों ने बड़ी संख्या में स्वर्ण मुद्रायें जारी की जिनमें शासकों के नाम व चित्र अंकित होते थे। इनके द्वारा जारी स्वर्ण मुद्राओं की धातु सबसे अधिक शुद्ध थी।
- कुषाण वंश के महानतम शासक कनिष्क ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को संरक्षण प्रदान किया गया। इसके द्वारा वसुमित्र की अध्याक्षता में कश्मीर के कुण्डलवन में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।
- कुषाण वंश के शासकों के समय गांधार और मथुरा कला शैली का विकास हुआ। पश्चिमोत्तर भारत में कुषाण शासकों के द्वारा

गांधार कला शैली में स्लेटी पत्थर से बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियों का निर्माण करवाया गया। वहीं मथुरा कला शैली में बुद्ध के साथ-साथ जैन तीर्थंकर और हिन्दू देवी- देविताओं की मूर्तियों का निर्माण बलुआ पत्थर में करवाया।

- कुषाण शासकों ने वसुमित्र,अश्वघोष, पार्श्व,नागार्जुन जैसे महान बौद्ध विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। अश्वघोष ने बौद्ध धर्म की बाईबिल के नाम से प्रसिद्ध बुद्धचरित की रचना की।
- कुषाण के राजवैद्य चरक ने चरक संहिता की रचना करके चिकित्सा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया।
- कुषाण शासकों के समय आंतरिक व्यापार के साथ-साथ विदेश व्यापार का काफी अधिक विकास हुआ। इस समय रेशम मार्ग के माध्यम से भारत ने चीन और मध्य एशिया से व्यापारिक गतिविधियाँ की थी। इस समय विदेशी व्यापार भारत के पक्ष में था।

**निष्कर्षः-** कुषाण वंश के शासकों ने मौर्योत्तरकाल में राजनैतिक अस्थिरता के वातावरण में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करके भारत में कला, विज्ञान, साहित्य और धर्म के क्षेत्र में विशेष प्रगति की ।

**3.अलाद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण प्रणाली पर प्रकाश डालें।**

**उत्तरः-** उलाद्दीन खिलजी मध्यकालीन भारत का एक ऐसा शासक था जिसने व्यापक स्तर पर आर्थिक सुधार किये। इनमें से बाजार नियंत्रण व्यावस्था उसका सबसे महत्वपूर्ण सुधार था।

**उद्देश्यः-**

- तारीख- ए-फिरोजशाही के अनुसार- सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति।
- अमीर खुसरों के अनुसार- जन्म कल्याण हेतु ।
- मुद्रा स्फीति नियंत्रण।

**विशेषताएँः-**

- जियाउद्दीन बरनी के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण के लिए तीन प्रकार के बाजारों की स्थापना की उसने सभी वस्तुओं के मूल्य निश्चित कर दिये।
- उसने अनाज बाजार के लिये शहना-ए-मंडी की स्थापना की। उसने मंडी में अनाज के मूल्यों की स्थिरता और अनाज की सदैव उपलब्धता बनाये रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया।
- अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा सराय-ए-अदल के नाम से एक ऐसा बाजार स्थापित करवाया जिसमें निर्मित वस्तुओं विदेशी व पड़ोसी प्रदेशों से आने वाली वस्तुये बेची जाती थी।
- अलाउद्दीन ने घोड़ों, दासों, मवेशियों का अलग से बाजार स्थापित करवाया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दीवान-ए-रियासत के नाम से बाजार व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिये एक विभाग की स्थापना की।
- राशनिंग प्रणाली के तहत आपातकालीन परिस्थितियों के लिये अनाजों को गोदामों में रखा।

**सकारात्मक प्रभावः-**

- राजकीय आय में वृद्धि।
- सैनिकों के साथ-साथ आम जनता को लाभ।
- मूल्यों की स्थिरता कालाबाजारी और दलाली पर नियंत्रण।

**नकारात्मक प्रभावः-**

- यह व्यवस्था सीमित क्षेत्र में लागू होने से सभी स्थानों पर मूल्यों की समानता न होना।
- वस्तुओं के मूल्य निर्धारण से व्यापारियों को लाभ की संभावना कम होना।
- कृषि और कृषक कल्याण पर कोई ध्यान न देना।

**निष्कर्षः-** अलाउद्दीन खिलजी द्वारा अपनाई गयी बाजार नियंत्रण व्यवस्था ने तत्कालीन समय की आवश्यकताओं को पूरा कर दिया था। इसलिये इतिहास का लेनपूल में अलाउद्दीन को राजनैतिक अर्थशास्त्री की संज्ञा दी।

**4. मुगलकाल के दौरान कला और संस्कृति के विकास का विश्लेषण कीजिए।**

**उत्तरः-** मुगलकाल में कला और संस्कृति के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ। समस्त मुगल शासकों द्वारा कला एवं संस्कृति के संरक्षण एवं पोषण के लिये। सराहनीय प्रयास किये गये, जो इस प्रकार है-

**स्थापत्य कला-**

- इस समय हिन्दू और मुस्लिम कला शैली के समन्वय से कई इमारतों का निर्माण किया गया।

- बाबर ने पानीपत, संभल और अयोध्या में मस्जिदों का निर्माण करवाया।
- हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह भवन की स्थापन की।
- अकबर द्वारा आगरा का किला, हुमायूँ का मकबरा, बुलंद दरबाजा, फतेहपुर सीकरी, का निर्माण करवाया।
- जहाँगीर के शासन काल में एतमौद्दौला का मकबरा का निर्माण हुआ।
- शाहजहाँ का काल स्थापत्य कला के लिये स्वर्णकाल माना जाता है, उसने ताजमहल, दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद, मोती मस्जिद का निर्माण करवाया।
- बीबी  का मकबरा औरंगजेब ने बनवाया।

**चित्रकलाः-**

- मुगल वंश के शासकों में जहाँगीर ने चित्रकला के क्षेत्र में सबसे अधिक योगदान दिया। इसलिये इसके काल को चित्रकला का स्वर्ण काल कहा जाता है।
- मुगलकाल में चित्रकला में लाल और नीले रंग के रंगों का अधिक प्रयोग हुआ।
- इस समय के प्रमुख चित्रकार दशवंत,उस्ताद मंसूर, विशनदास, बसावन आदि प्रमुख थे।
- इस काल में प्रकृतिवादी और यथार्थवादी चित्र बनाये गये।

**संगीतकलाः-**

- मुगल शासकों ने संगीत कला के विकास में भी योगदान दिया।

THE MARKS OF TRUST

# समीक्षा इंस्टीट्यूट

समीक्षा™ इंस्टीट्यूट
We Nurture Your Future

TEST SERIES FOR
MPPSC
(MAINS EXAM)
2019

- Online and Offline Test Available
- उत्तर लिखने के लिए महत्वपूर्ण टिप्स
- टॉपिक के अनुसार पेपर्स
- कम्पलीट पेपर्स
- कॉपी के मूल्यांकन (Valuation) के बाद मार्क्स देना साथ ही महत्वपूर्ण कमेंट्स देना

1 **PHOOLBAGH BRANCH**
Near Bank of India, Phoolbagh Chauraha, Gwalior, 0751-4062762

2 **THATIPUR BRANCH**
54, Mayur Market, Near Petrol Pump, Thatipur, Morar, 0751-4008254

3 **PINTOO PARK BRANCH**
Near Of Vevekanand School, Pintoo Park Tiraha, Bhind Road, Gwalior, 0751-4008254

www.samikshainstitute.org
Samiksha Institute
Samiksha Institute

Admissions Enquiry : 98262-28312, 90745-85746, 77708-38222

98262-28312, 90745-85746, 77708-38222 | Follow us on : | Subscribe YouTube Channel

- अकबर के समय तानसेन, बाजवहादुर, रामदास,हरिदास और बैजू बावरा जैसे संगीतज्ञों का प्रभाव था।
- जहांगीर ने गजल गायको को संरक्षण दिया।
- औरंगजेब के समय संगीत को राजकीय संरक्षण प्राप्त नहीं था लेकिन सर्वाधिक संगीत ग्रंथों की रचना इसी के काल में हुई।

**संस्कृतिः-**

- मुगलकाल में मुस्लिम संस्कृति का काफी प्रचार-प्रसार हुआ लेकिन इस समय हिन्दू-मुस्लिम समन्वयवादी संस्कृति का विकास भी हुआ। जिसमें मुगलशासकों ने इस्लाम धर्म को राजकीय धर्म बनाने के बावजूद भी हिन्दू, जैन, सिख और अन्य धर्मो के प्रति सकारात्मक सोच रखी।
- अकबर ने सुलहकुल की नीति के माध्यम से धार्मिक समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।

**साहित्यः-**

- मुगलकाल में फारसी के साथ-साथ संस्कृत, हिन्दी, मराठी,बंगाली, राजस्थानी, गुरूमुखी आदि भाषाओं में साहित्य सृजन हुआ।
- अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना करके संस्कृत के कई महान ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाया।
- मुगलकाल मे बाबर ने बाबारनामा, गुलबदन बेगम ने हुमायूँनामा, जहांगीर ने तुजुक-ए-जहांगीरी की रचना की ।

**निष्कर्षः-** मुगलकाल में न केवल एक विशाल साम्राज्य स्थापित हुआ बल्कि इस समय कला और संस्कृति के क्षेत्र में अभूतपूर्व

विकास हुआ। इसीलिये मुगलकाल को मध्यकाल का स्वर्णकाल कहा जाता है।

**5. अकबर के विजय अभियानों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।**

**उत्तरः-** अकबर एक महान विस्तारवादी शासक था। उसने अपने विजय अभियानों के द्वारा भारत में एक विशाल मुगल साम्राज्य स्थापित किया। उसका विजय अभियान इस प्रकार है-

- 1561 में मालवा के शासक बाजबहादुर को मुगल सेनापति आधम खाँ और पीर मुहम्मद ने पराजित किया।
- 1564 में गोंडवाना अभियान का नेतृत्व मुगल सेनापति आसफ खाँ ने किया। इसमें वीर नारायण की संरक्षिका रानी दुर्गावती वीरगति को प्राप्त हुई।
- 1562 में आमेर के शासक भारमल ने स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार कर ली।
- 1568 में अकबर ने मेवाड़ राज्य के खिलाफ अभियान चलाया। इस समय यहां का शासक उदयसिंह था। इस युद्ध में राजपूतों की ओर से संघर्ष करते हुये जयमल और फत्ता वीरगति को प्राप्त हुये ।
- 1569 में रणथंभौर के शासक सुरजनराय हाडा को पराजित किया गया।
- 1569 में मुगल सेनापति मजनू खाँ ने कालिंजर के शासक रामचंद्र को पराजित किया।

- 1570 में मेवाड़ के शासक चंद्रसेन , जैसलमेर के शासक हरराय और बीकानेर के शासक रायकल्याणमल ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।
- 1571 में गुजरात के शासक मुज्जफरखाँ तृतीय के विरूद्ध मुगल सेनापति मिर्जा अजीज कोका ने अभियान किया। उसके बाद 1972 में स्वयं अकबर ने गुजरात के शासक मिर्जा हुसैन के विरूद्ध अभियान किया।
- 1576 में हल्दीघाटी के युद्ध में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप के विरूद्ध मुगल सेनापति आसफ खाँ और मानसिह ने सफल अभियान किया।
- 1581 में काबुल के शासक हाकिम मिर्जा को अकबर और मानसिंह ने हराया था।

# MPPSC 2019 MAINS TEST SERIES OF SAMIKSHA INSTITUTE

| S. No. | Topic | Time (hr.) | Marks | Day | Date |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | Ancient and Medieval history | 1 ½ | 150 | Monday | 10-08-2020 |
| 2. | Modern history | 1 ½ | 150 | Friday | 14-08-2020 |
| 3. | World and Post Independent | 1 ½ | 150 | Monday | 17-08-2020 |
| 4. | MP History and Culture | 1 ½ | 150 | Friday | 21-08-2020 |
| 5. | Paper-1 (Part- A) | 1 ½ | 150 | Monday | 24-08-2020 |
| 6. | World geography | 1 ½ | 150 | Friday | 28-08-2020 |
| 7. | Indian Geography | 1 ½ | 150 | Monday | 31-08-2020 |
| 8. | MP geography + Disaster and water Management | 1 ½ | 150 | Friday | 04-09-2020 |
| 9. | Paper-1 (Part- B) | 1 ½ | 150 | Monday | 07-09-2020 |
| 10. | Full Test Paper - 1 | 3 | 300 | Friday | 11-09-2020 |
| 11. | Paper-2 (Part- A) - 1. To 1.6 | 1 ½ | 150 | Monday | 14-09-2020 |
| 12. | Paper-2 (Part- A) - 1.7 To 3.12 | 1 ½ | 150 | Friday | 18-09-2020 |
| 13. | Paper-2 (Part- B) – 4 To 10.4 | 1 ½ | 150 | Monday | 21-09-2020 |
| 14. | Full Test Paper - 2 | 3 | 300 | Friday | 25-09-2020 |
| 15. | Paper-3 (Part- A) – 1.1 To 2.5 | 1 ½ | 150 | Monday | 28-09-2020 |
| 16. | Paper-3 (Part- A) – 2.6 To 6.6 | 1 ½ | 150 | Friday | 02-10-2020 |
| 17. | Paper-3 (Part- A) | 1 ½ | 150 | Monday | 05-10-2020 |
| 18. | Paper-3 (Part- B) – 7.1 To 7.9 | 1 ½ | 150 | Friday | 09-10-2020 |
| 19. | Paper-3 (Part- B) – 7.10 To 7.17 | 1 ½ | 150 | Monday | 12-10-2020 |

Samiksha Institute 9826228312

THE MARKS OF TRUST

# समीक्षा इंस्टीट्यूट

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 20. | Paper-3 (Part- B) | 1 ½ | 150 | Friday | 16-10-2020 |
| 21. | Full Test Paper - 3 | 3 | 300 | Monday | 19-10-2020 |
| 22. | Full Test Paper - 4 | 3 | 200 | Friday | 23-10-2020 |
| 23. | Full Test Paper - 4 | 3 | 200 | Monday | 26-10-2020 |
| 24. | Full Test Paper -5 | 2 | 200 | Friday | 30-10-2020 |
| 25. | Full Test Paper - 5 | 2 | 200 | Monday | 02-11-2020 |
| 26. | Full Test Paper - 6 | 1 | 100 | Friday | 06-11-2020 |
| 27. | Full Test Paper - 6 | 1 | 100 | Monday | 09-11-2020 |
| 28. | Full Test Paper - 1 | 3 | 300 | Friday | 13-11-2020 |
| 29. | Full Test Paper - 2 | 3 | 300 | Monday | 16-11-2020 |
| 30. | Full Test Paper - 3 | 3 | 300 | Friday | 20-11-2020 |

# CLICK HERE TO REGISTER NOW